# आत्मा सत्य सनातन

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,**

**पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

आत्मा सत्य अर्थात ईश्वर और ईश्वर ही सत्य है। सनातन का अर्थ है जो सदैव रहता है, कभी नष्ट नहीं होता। आत्मा सत्य सनातन है। आत्मा चेनतमय परमाणुओं का पिण्ड है। हर चेतन प्राणी में आत्मा रहता है। आत्मा के शरीर से निकल जाने पर शरीर नष्ट हो जाता है। शरीर जड़ है आत्मा सनातन और सत्य है। आत्मा के कारण ही शरीर चेतन प्रतीत होता है। जड़ वरण रूप, रंग, रस वाला होता है। विज्ञान ने अनेक तत्वों को खोजा है। रूपी पदार्थ जड़ है क्योंकि उनमें टूटने और जुड़ने की क्रिया चलती रहती है। आत्मा न जुड़ती है और न टूटती है। वह एक रूप है, सत्य है और सनातन है। चेतना पड़ता से पृथक है। जिसने इस आत्म तत्व को जान लिया वह समस्त ब्रहमाण्ड को जान लेता है। भगवान महावीर ने आत्मज्ञान प्राप्त किया था। उन्होंने जड़ और चेतन सभी पदार्थों में आत्मा का दर्शन किया था। चौरासी लाख जीव योनियों में आत्मा समान है। आत्मा के स्तर पर कोई भेद नहीं है। भेद कर्मावरण के कारण दिखलाई देता है। कर्मों का आवरण जिस पर जितना घना है उस पर उतनी ही अधिक मलीनता है।

इस सृष्टि में केवल एक ही तत्व ऐसा है जो सनातन सत्य है। वह तत्व है आत्मा। आत्मा के अतिरिक्त जितने भी तत्व है, वे सभी गलन–मिलन धर्मा हैं। दूसरे शब्दों में इन्हें पुद्गल कहा जाता है। यह जगत् दो तत्वों से मिलकर बना है– जड़तत्व और चेतनतत्व। जड़तत्व वह है जिसमें पूरण और गलन की क्रिया होती है। दर्शन की भाषा में इसे पुद्गल या भौतिक तत्व कहते है। आत्मतत्व वह तत्व है जिसमें हलन–चलन कि क्रिया होती है। ये दोनों तत्व शाश्वत हैं। इनके गुण पृथक–पृथक हैं। दोनों को मिश्रण को संसार कहते हैं। आत्मदर्शन जीवन का सनातन सत्य है। आत्मदर्शन सही दृष्टि सही सोच के माध्यम से लोगों को शिक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। दृष्टि के सही होने पर सब ठीक हो जाता है। इस संसार का

वास्तविक सत्य क्या है? इसे हमे जानना है। सबसे निरपेक्ष होकर इस विषय पर चिन्तन करना चाहिए।

किसी धर्म, पंथ, मजहब, सम्प्रदाय और अन्य चीजों से निरपेक्ष होकर चिन्तन करने से हम उस तत्व तक पहुंच सकते हैं जो सनातन सत्य है। आत्मा ही सनातन सत्य है। भौतिक सृष्टि पंचभूतात्मक है। यह लोक इसी पंचभूतों से बना हुआ है। पंचतत्वों के मेल से सृष्टि चलती है। भरण–पोषण करने से यह शरीर फलता फूलता रहता है। किन्तु जैसे ही इसके तत्व क्षीण होते हैं। यह जीर्ण शीर्ण होकर नष्ट हो जाता है। केवल आत्मा ही शेष रहता है और वही सनातन सत्य है। मैं बोल रहा हूं। कौन बुलवा रहा है? हांथ–पांव चलाने वाले कौन है? वह तत्व आत्मा है। वह शरीर में व्याप्त रहता है। इसीसे शरीर चलता है। शरीर का सनातन सत्य आत्मा है। उसके चले जाने पर शरीर वैसे का वैसा पड़ा रहता है, किन्तु कार्य नहीं करता। संसार में जितने प्रकार के संबंध है, सब स्वार्थ के धागे से जुड़े हुए हैं। स्वार्थ की टकराहट होने पर यथार्थ का ज्ञान होता है।

व्यावहारिक सत्य को इस प्रकार समझा जा सकता है। एक पिता के दो पुत्र हैं। पिता की धन–सम्पत्ति पर दोनों की निगाहें हैं। जब पिता की सम्पत्ति का बंटवारा करना होता हैं तो दोनों एक दूसरे से अधिक प्राप्त करना चाहते हैं। यही से टकराहट शुरू हो जाती है और यह तब तक चलती रहती है, जब तक वह सम्पत्ति नष्ट नहीं हो जाती। जहां टकराहट है वहां विनाश है। इसलिए धन–सम्पत्ति के लिए कभी भी टकराव नहीं पालना चाहिए। धन–सम्पत्ति विनाशी है। अपने पुरुषार्थ से अर्जित धन–सम्पत्ति का ही उपयोग जीवन में करना चाहिए। क्योंकि जिसके भाग्य में जितना लिखा हैं उसको उतना ही मिलेगा उससे अधिक नहीं। दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने से सबकुछ बदल जाता है।

आत्मज्ञान से सही दृष्टि बनेगी। मिथ्या दृष्टि दूर होगी। नकारात्मक दृष्टिकोण परिवर्तित होगा। जब दृष्टि सही रहेगी तो सभी प्राणियों के साथ अच्छा व्यवहार होगा। सभी प्राणियों में एक ही आत्मा का वास है। चाहे प्राणी छोटा हो या बड़ा, हाथी हो या चींटी सब में एक ही आत्मा निवाश कर रही है। आत्मा के स्तर पर कोई भेद नहीं है। भेद है कार्मण शरीर के कारण। सही दृष्टिकोण होने पर सनातन सत्य का ज्ञान हो जाता है। हमारे शरीर में जो हमे

सुख–दुःख की अनुभूति होती है, वह कौन करता है? जड़ को अनुभूति नहीं होती। क्योंकि उसमें संवेदना नहीं है। वह पुद्गल कहलाता है। वह भी सत्य है किन्तु अनुभूति नहीं करता। अनुभूति आत्मा या चेतन तत्व करता है। अतः आत्मा ही सनातन सत्य है। आत्मा, ज्ञाता और द्रष्टा है। वह अनादि और अनन्त है। न तो उसे देखा जा सकता है न ही स्पर्श किया जा सकता है।

गीता में आत्म तत्व की बहुत सुंदर व्याख्या इसी प्रकार की गई है। सनातन सत्य को जानने से जीवन की दशा और दिशा बदल जाती है। नजर बदलने से नजरिया बदल जाता है। उसी एक तत्व के ज्ञान हो जाने पर सबकुछ ज्ञात हो जाता है। शरीर भौतिक तत्वों से बना है। चेतनतत्व इसे संचालित करता है। यदि चेतनतत्व न रहे तो शरीर नष्ट हो जायेगा। आत्मा हर प्राणी में होती है। आत्मा में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन और अनंत सुख का स्रोत है, अतः आत्मा सनातन सत्य है।